RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

# लार्ड इरविन की अक्तूबर 1929 की घोषणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Manjeet Singh

*Mphil in History (UGC NET)*

**ARTICLE DETAILS**

**Article History**
*Published Online:* 13 March2019

**Keywords**
विदेश नीति, राजनय, गुटनिरपेक्षता, कश्मीर समस्या, डोकलाम विवाद, संयुक्त राष्ट्र संघ, परमाणु परीक्षण।

**ABSTRACT**

1929 का वर्ष भारत के लिए अशान्ति एवं उथल–पुथल भरा वर्ष रहा। देश आर्थिक मन्दी से जूझ रहा था। कृषकों, मजदूरों, व्यापारियों आदि की हालत ख्राब हो गई। मजदूर कारखानों में भूखे–प्यासे काम करते थे। उन्होंने बड़ी–बड़ी हड़तालें कर दीं। मजदूरों, किसानों तथा युवकों पर साम्यवाद का प्रीाव निरन्तर बढ़ता चला जा रहा था। परिणामस्वरूप मेरठ षड्यन्त्र केस हुआ जिसमें 30 साम्यावादी नेता गिरफतार कर लिये। कांग्रेस ने इस स्थिति का लाभ उठाने का प्रयास किया। उसने कलकत्ता अधिवेशन, 1928 में प्रस्ताव पास कर सरकार को धमकी दी कि यदि सरकार ने 31 दिसम्बर, 1929 तक नेहरू रिपोर्ट को स्वीकृत नहीं की तो उसे अंहिसात्मक असहयोग आन्दोलन का सामना करना पड़ेगा।

**शोध प्रविधि** :– इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए आंकड़े/तथ्य द्वितीयक स्त्रोतों से जुटाए गए हैं। इस शोध पत्र में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर तर्क प्रस्तुत किए हैं जो शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों तथा ज्ञान से प्राप्त किए है। ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

इंग्लैण्ड में 1929 में चुनाव हुए और मजदूर दल की सरकार बनी। रैम्जे मैकडॉनल्ड प्रधानमंत्री बने और बैजबुड बैन्न को भारत का सचिव नियुक्त किया गया। इससे भारतीयों में आशा जाग्रत हो गयी। नई सरकार ने भारतीयों की मांग पर विचार करने के लिए लार्ड इरबिन को भारत से इंग्लैण्ड बुलाया जिसने वहां से वापिस आने पर 31 अक्तूबर, 1929 को ब्रिटिश सरकार की ओर से एक घोषणा की।

अक्तूबर घोषणा के कारणः–

अक्तूबर 1929 की घोषणा के मुख्य कारण इस प्रकार थे–

(1) साइमन कमीशन 1928 में भारत आया जिसका भारतीयों ने बहिष्कार किया और जहाँ भी यह कमीशन गया वहां प्रदर्शनों, हड़तालों, जुलूसों और साइमन कमीशन वापिस जाओ के नारों से उसका स्वागत किया। इसके विरोध में सरकार ने दमनकारी नीति अपनाई। भारतयीं पर लाठी चार्ज किया और गोलियाँ बरसाईं। लाहौर ने लाला लाजपत राय पर इतनी लाठियाँ बरसाई गईं कि उनकी मृत्यु हो गइ। परिणामस्वरूप देश में राजनीतिक अराजकता उत्पन्न हो गई। अब सरकार इतीन घबरा गई कि वह किसी भी तरह से भारतीयों को शान्त करना चाहती थी।

(2) लाला लाजपत राय की मृत्यु और सरकार की दमनकारी नीति ने क्रोधित होकर क्रान्तिकारी नेता भगत सिंह और उनके साथियों ने सांडर्स की हत्या कर दी और केन्द्रीय असैम्बली में बम फेंका। परिणमस्वरूप आतंक फैलाने के जर्म में भगतसिंह और उनके साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में उन्हें अच्छा भोजन नहीं दिया जाता था। यहां तक कि उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। परिणामस्वरूप भारतीय विद्यार्थियों एवं नवयुवकों ने जगह–जगह क्रान्तिकारी संस्थाओं का निर्माण कर लिया। उन्होंने जगह–जगह क्रान्तिकारी गतिविधियों को अन्जाम दिया। अतः अंग्रेजों के लिए आवश्यक हो गया कि वे जल्दी से भारतीयों को शान्त करें।

(3) 1928 ई. में सरकार ने बारदौली में भूमिकर में 25 प्रतिशत की वृद्धि कर दी। अतः बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में वहाँ के किसानों ने ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध जोरदार आन्दोलन छेड़ दिया सरकार इस आन्दोलन को दबाने में असफल रही और कृष्कों का आन्दोलन सफल रहा। सरकार ने कर वृद्धि पर तुरन्त रोक लगा दी। परन्तु आन्दोलन एवं सरकार की दमनकारी नीति से राजनीतिक वातावरण दूषित हो गया।

(4) 1928–29 में भारत में हड़तालों का दोरान आरंभ हुआ। किसानों के अलावा बम्बई की कपड़ा मिलों के मजदुरों ने हड़ताल कर दी जो लगभग 6 महीने तक जारी रही। जमशेदपुर और अहमदाबाद के उद्योगों में भी मजदुरों ने हड़तालें कर दीं। दखिण भारत में रेलवे कर्मचारियों एवं मजदूरों ने हड़ताल कर दी। सरकार ने मजदूरों के अनेक नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। परिणामस्वरूप श्रमिकों ने तोड़–फोड़ एवं हिंसात्मक कार्यवाहियों प्रारंभ कर दीं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

(5) लाहौर केस में पकड़े गये कैदियों ने जेल में भूख हड़ताल कर दी। कलकत्ता के जितेन्द्र नाथ दास की 67 दिन की भूख हड़ताल के पश्चात् मृत्यु हो गइ। इस घटना से समस्त दक्षिण भारत में असन्तोष की लहर उत्पन्न हो गई।

(6) 1928 में कांग्रेस का लाहौर में अधिवेशन हुआ जिसमें प्रस्ताव पारित किया गया कि सरकार 1929 तक नेहरू रिपोर्ट की स्वीकार कर ले नही ंतो ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन प्रारंभ किया जायेगा।

अक्तूबर 1929 की घोषणा :–

लार्ड इरविन को ब्रिटिश सरकार ने भारत की समस्या पर विचार कने के लिए इंग्लैण्ड बुलाया। इंग्लैण्ड से लौटते ही उसने 31 अक्तूबर 1929 को ब्रिटिश सरकार की ओर से घोषणा की कि–''मुझे ब्रिटिश सरकार की ओर से यह घोषणा करने का अधिकार प्राप्त हुआ हैं कि सरकार के मतानुसार 1917 की घोषणा में यह अन्तर्निहित है कि भारत को अन्त में औपरिवेशिक स्वराजय प्रदान किया जायेगा।'' इसमें यह भी कहा गया कि साइमन कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित होने के उपरानत इस पर या भारत के नये संविधान के किसी अन्य प्रस्ताव पर विचार–विमर्श करने के लिए गोलमेज कांफ्रेंस का आयोजन किया जायेगा। जिसमें भारतीय प्रदेशों, भारतीय देशी राज्यों और ब्रिटिश सरकार ने प्रतिनिधि भाग लेंगे।

घोषण की भारत में प्रतिक्रिया :–

यह घोषणा अपने आप में स्पष्ट नहीं थी। इसमें भारतीयों को तुरन्त औपरिवेशिक स्वराज्य देने का आश्वासन नहीं दिया गया था। लोगों ने इसके कई तरह के अर्थ निकाले। फिर भी भारतीयों केा इससे कुछ आशा बंधी। इस घोषणा के पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कार्यकारणी समिति की बैठक बुलाई। इस बैठक नेहरू आदि नेताओं ने भाग लिया। इसमें अक्तूबर की घोषणा के पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने कार्यकारणी समिति की बैठक बुलाई। इस बैठक में महात्मा गांधी, डॉ. अंसारी, पं. मोतीलाल नेहरू, बिट्ठल भाई पटेल, श्री निवास आयंगर, पं. जवाहर लाल नेहरू आदि नेताओं ने भाग लिया। इसमें अक्तूबर की घोषणा पर चर्चा हुई। इसके पश्चात् कांग्रेस ने एक मैनीफेस्टी जारी किया जिसमें सरकार के प्रयासों की प्रशंसा की गई और आशा व्यक्त की गई कि गोलमेज कान्फ्रेन्स भारत के लिए औपनिवेशक संविधान का निर्माण करेगी, न केवल औपनिवेशक राज्य की स्थापना के विषय में विचार–विमर्श हो। सरकार से अपील की गई कि वह अधिक उदार दृष्टिकोण और मेल–मिलाप की नीति अपनाये जिससे भारतीय अनुभव करने के लिए संभी युद्धबन्दियों को रिहा कर दिया जाये। नवयुवक कांग्रेस नेताओं जैसे जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस ने इस मैनीफेस्टो का जोरदार विरोध किया। वे पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते थे। अतः उन्होंने कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति से त्यागपत्र दे दिया, परन्तु गांधी जी औपनिवेशिक स्वराज्य चाहते थे। उसके लिए वे सरकार से सहयोग के पक्ष में थे।

इंग्लैण्ड में प्रतिक्रिया–

अक्तूबर 1929 की घोषणा की ब्रिटेन में भी प्रतिक्रिया हुई। अनुदार दल के नेता चर्चिल ने इसकी तीखे शब्दों में आलोचना की। वह भारत की स्वतन्त्रता का कट्टर विरोधी था। उसका मानना था कि भारतीयों को औपनिवेशिक स्वराज्य देना एक भयंकर अपराध के बराबर है। परन्तु संसद में उसका बहुमत नहीं था इसलिए वह कुछ न कर सका। दूसरी ओर मजदूर दल अपनी सरकार को किसी भी प्रकार से खतरे में नहीं डालना चाहता था। वह भारतीयों को हर हाल में प्रसन्न करना चाहती थी ताकि उसे भारत में किसी भी प्रकार के विरोध का सामना नहीं करना पड़े। भारतीय नेता भी सरकार को अपनी नीति स्पष्ट करने के लिए उस पर दबाव दे रहे थे।

गांधी इरविन बैठकः–

मजदूर सरकार अपनी स्थिति को ज्यों का त्यों बनाये रखने के लिए दोहरी, नीति अपना रही थी। कांग्रेस में इसे लेकर असन्तोष उभर रहा था। अतः 23 दिसम्बर, 1929 को गांधी जी ने वायसराय लार्ड इरविन से भेंट की । इस अवसर पर मोतीलाल नेहरू, सर तेज सप्रू और मुहम्मद अली जिन्नाह भी उनके साथ थे। अपनी वार्ता के दौरान गांधी जी ने कहा कि गोलमेंज कान्फ्रेंस में औपनिवेशिक दर्जा देने पर भी विचार किया जाये। परन्तु इरविन ने ऐसा आश्वासन देने से इन्कार कर दिया कि गोलमेज बैठक में औपनिवेशिक सवंधिान बनाया जायेगा। अतः गांधी जी को खाली हाथ लौठना पड़ा। अब कांग्रेस को ब्रिटेन की न्यायप्रियता पर बिल्कुल भरोसा नहीं रहा। कांग्रेस ने अक्तूबर घोषणा को महत्त्वहीन मान लिया। इस तरह अंग्रेजों के व्यवहार से सम्पूर्ण भारत में असन्तोष की लहर उत्पन्न हो गई।

पूर्ण स्वतन्त्रता सम्बन्धी प्रस्तावः–

31 दिसम्बर, 1929 को कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लाहौर में हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता पं. जवाहर लाल नेहरू ने की। इस अधिवेशन में 31 दिसम्बर, 1929 की आधी रात को रावी नदी के तट पर पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पारित किया गया। इस अवसर पर तिरंगा झण्डा लहराया गया। इस अवसर पर पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि–''वीर ओर कर्मठ लोग ही सफलता प्राप्त करते हैं। डरपीक व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें भावी दुष्परिणामों की आशंका रहती है। बड़े उद्देश्य प्राप्त करने के लिये बड़े ही खतरों का सामना करना पड़ता है। हम प्रयत्नशील रहेंगे चाहे हमें सफलता कभी भी मिले। हम विदेशी

शासन से स्वतन्त्रता प्राप्त करने के अभिलाषी हैं और इस विषय में समस्त् देश हमारे साथ है। हमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनेक कष्ट सहने पड़ेंगे। आज से हमरा लक्ष्य पूर्ण–स्वतन्त्रता प्राप्त करना है।'' इस समय यह भी निर्णय लिया गया कि प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को स्वतन्त्रता दिवस मनाया जायेगा। 26 जनवरी, 1930 को प्रथम स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया।

लाहौर अधिवेशन में गांधी जी ने भी राष्ट्र की नब्ज को पहचान लिया और उन्होंने हिंसात्मक क्रांति को रोकने के लिए अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया। गांधी जी ने कहा–''.....इस महिने की 11वीं तारीख की मैं आश्रम के अपने कुछ ऐसे सहयोगी कार्यकर्ताओं को लूंगा जिनकों मैं ले सकता हूँ और नमक कानून तोडूंगा। मैं जानता हूँ कि आप मुझे गिरफ्तार करके मुझे ऐसा करने से रोक सकते हैं, लेकिन मुझे उम्मीद है कि मेरे बाद भी हजारों–लाखों लोग इस काम को एकदम अनुशासित तरीके से करने के लिए तैयार रहेंगे। इस नमक कानून को तोड़ने में उनको जो भी सजा दी जायेगी उसे भुगतने के लिए तैयार रहेंगे, ऐसा कानून जो कानून की पुस्त में कंलक जैसा है।''

निष्कर्षः–

उपर्युक्त वर्ण के आधार पर कहा जा सकता है कि अक्तूबर घोषणा लार्ड इरविन ने महारानी की और से 31 अक्तूबर, 1929 को की। परन्तु इस घोषणा में भारतीयों को औपनिवेशिक स्वराज्य का कोई आश्वास नहीं दिया गया। इस घोषणा की भारत और ब्रिटेन में खूब आलोचना हुई। महात्मा गांधी ने औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग के लिए वायसराय इरविन से भेंट की परन्तु इसमें भी गांधी जी की निराशा हाथ लगी। अतः 31 दिसम्बर, 1920 के लाहौर के कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्ति को अपना लक्ष्य बनाया गया और प्रत्येक 26 जनवरी को स्वतन्त्रता दिवस मनाने का निर्णय लिया गया। गांधी जी ने भी सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाने की घोषणा की।

## सन्दर्भ सूची :


1. रमेशचन्द्र दत्त : इंडिया इन दि विक्टोरियस ए (कीमन पाल, लंदन), पृ0 456–457.
2. रमेश चन्द्र मजूमदार : हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 4
3. जोगेशचन्द्र बागल : हिस्ट्री ऑफ दी इंडिया एसोसिएशन, कलकत्ता, पृ0 212
4. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी : ए नेशन इन मेकिंग, पृ0 190
5. रमेश चन्द्र मजूमदार : हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 13
6. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी : ए नेशन इन मेकिंग, पृ0 196
7. बाल गंगाधर तिलक : स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स (1918), पृ0 37–50
8. एक स्टेप इन दि स्टीमर में अमृत बाजार पत्रिका के संपादक मोती लाल घोष की भूमिका (नेशनल ब्यूरो, बंबई, 1918)
9. वही, पृ0 9
10. मजूमदार और मजूमदार : कांग्रेस एण्ड कांग्रेसमैन इन दि प्री–गांधीयन इरा : 1885–1917, पृ0 72
11. इंड विद्यावाचस्पति : भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास (सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1860), पृ0 112
12. https://www.indiatoday.in/education-today/gk-current-affairs/story/poona-pact-338403-2016-09-24
13. http://m.lokmat.com/gadchiroli/it-was-dabkare-who-had-done-punes-contract-babasaheb/


RRIJM 2015, All Rights Reserved 